International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 7 Issue 2, March-April, 2019, Impact Factor 3.275

'तुम मेरी कथा' - नारी संघर्ष की मर्मस्पर्शी कहानी

डॉ. वीरेंद्र कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

'तुम मेरी कथा 'रमाशंकर श्रीवास्तव का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में मुख्य रूप से नारी संघर्ष को आधार बनाया गया है। इस उपन्यास में एक प्रमुख नारी चरित्र है वह है दुलारी अर्थात कनिया चाची। इसके साथ ही दो अन्य नारी पात्र हैं एक है राधा और दूसरी अरुणा। उपन्यास में मुख्य कथा दुलारी के आसपास ही घूमती है। समाज की आर्थिक समस्याएं सामाजिक समस्याओं के साथ अपनी जगह रहती हैं और समाज में अर्थ की सच्चाई यह है कि सुंदर, सुशील लड़की को भी योग्य वर नहीं मिल पाता। यही चिंता हरी बाबू को सताए रहती है "समय ने पलटा खाया। हरी बाबू जो चाहते थे ; वह नहीं हो सका । दुलारी की शादी एक विधुर से हुई।"1

हरी बाबू के माता-पिता जल्दी चल बसे थे और हरी बाबू के अपनी बहन के संबंध में जो सपने थे वह पूरे नहीं हो पाए "असल में हरी बाबू की एकमात्र लाड़ली बहन वही दुलारी थी । मां-बाप नहीं रहे,वह बद्रीनाथ की यात्रा में एक बस दुर्घटना में परलोकवासी हो गए। उनकी भी प्रबल इच्छा थी कि दुलारी की शादी किसी उच्च कुल में हो। कई जगह लड़का देखा गया किंतु मन को नहीं भाया। कुछ जगह तिलक दहेज की मांग इतनी थी कि हरी बाबू के लिए टिकना कठिन था।"2

परशुरामपुर गांव के गजाधर बाबू नामी व्यक्ति थे । गांव में उनकी जायदाद थी और मान -सम्मान था । परशुरामपुर की जमीन पर ब्लॉक ऑफिस और पोस्ट ऑफिस की जमीन गजाधर बाबू ने ही दान दी थी "गजाधर प्रसाद धनी मानी थे इसीलिए दान देने में उन्हें कोई संकोच नहीं था। आज परशुरामपुर का जितना विकास हुआ है उसमें उनका ही योगदान है।"3

गजाधर प्रसाद के दो बेटे थे उमापति और रमापति। दोनों अच्छी नौकरी में थे। उच्च घरानों में दोनों की शादी हुई। लेकिन उमापति की पत्नी बहुत ज्यादा दिन जी नहीं पाई "एक बरसात की रात में उसे सर्प ने डस लिया। सुबह वह बेहोश पाई गई। डॉक्टरी इलाज हुआ पर सब व्यर्थ । एक साल की बच्ची को छोड़कर वह चल बसी।"4

उपन्यास की मूल कहानी का सूत्रपात यहीं से होता है। शेष उपन्यास की कथा इसी मूल घटना से जुड़ कर आगे बढ़ती है। उमापति की उम्र 25-26 की थी । उन्होंने अपनी बेटी राधा को

प्यार से पाला । परिवार टोले में उमापति की दूसरी शादी की चर्चा होने लगी। लेकिन उमापति प्रसन्न नहीं होते हैं "यह कैसे हो सकता है ? विमाता क्या बेटी को वैसा प्यार दे सकेगी जैसा उसे अपनी मां ने दिया?"5

लेकिन संपन्न वरों के पास आर्थिक समस्याओं से घिरे अनेक लोग अपनी कन्याओं को लेकर पहुंचते हैं ताकि धन के अभाव में उनकी अपनी बेटी आजीवन कुवांरी न बैठी रहे। उमापति की दूसरी शादी के लिए कई जगह से प्रस्ताव आए। उमापति की मां अपने बेटे की शादी अच्छी जगह करना चाहती थी- "कई लड़की वाले प्रस्ताव लेकर गजाधर प्रसाद के पास आए । उनमें मीरगंज के हरी बाबू का परिवार उन्हें ज्यादा पसंद आया। स्वयं हरी बाबू कई बार आए विवाह तय हो गया। साधारण ढंग से शगुन तिलक की रस्म निभा दी गई ।"6

उमापति की नई पत्नी का नाम था दुलारी। उसे कनिया चाची भी कहा जाने लगा। वह जल्दी ही परिवार में सबकी चहेती बन गई । उसके व्यवहार से रमापति की पत्नी विमला,उसकी देवरानी को ईर्ष्या होने लगी। लेकिन दुलारी अपनी देवरानी विमला से अच्छा व्यवहार रखती है । कुछ समय बाद हरी बाबू अपनी बहन दुलारी से मिलने परशुरामपुर आते हैं तो पड़ोस के परिवार का एक लड़का उन्हें मामा कहते हुए पुकारता है इस पर दुलारी कहती हैं "पड़ोस के परिवार का है। इसका नाम रमन है। मुझको कनिया चाची कहता है। बहुत मानता है मुझे।"7

यह बालक रमन धीरे-धीरे क्रमिक विकास पाते हुए कनिया चाची के साथ भावुक संबंध के स्तर पर उपन्यास में उभरता है और प्रारंभ से लेकर अंत तक बना रहता है ।

कनिया चाची स्त्री के गुणों की खान थी लेकिन उसके साथ बंदिशें बहुत अधिक थीं । वह बहुत बाहर नहीं निकल पाती थीं । रमन बताता है "किंतु नई कनिया चाची को यह छूट नहीं थी। मुझे याद नहीं कि मैंने कभी उन्हें कमरे से बाहर निकलते देखा हो। सुबह वह कब नहाने धोने निकलती थी, यह मैंने देखा ही नहीं।"8

रमन को कनिया चाची से बहुत स्नेह मिलता है "चाची की गोद में मैंने जो स्नेह पाया था , उतना ही सब नहीं है याद करने को । उसमें कोई और चीज भी धड़क रही थी। नए कपड़ों की सुगंध से भरा उनका वक्ष प्रदेश गमक रहा था। सब के बाद वह अदृश्य आत्मीयता आज कितनी दुर्लभ है।"9

वास्तव में उमापति को खुद तपेदिक का रोग था। डॉक्टरों ने उन्हें पत्नी के संपर्क से दूर रहने की सलाह दी थी "उमा चाचा को तपेदिक था। ऊपर- ऊपर से वे ठीक-ठाक लग रहे थे किन्तु भीतर से खोखले होते जा रहे थे । उनकी पहली पत्नी जीवित थी तभी डॉक्टरों ने बता दिया था कि वह पत्नी के सम्पर्क में न आएं।"1 0

दुलारी चाची जैसी स्त्रियों की समस्या उपन्यास की संवेदना को एक गहराई दे देती है। इया की हठ थी कि उमा पति की दूसरी शादी अवश्य हो हालांकि रमापति ने उन्हें समझाया था "माई तू भैया की दूसरी शादी करने की जिद कर रही है। किंतु तुझे मालूम है कि उनको टी. बी. है। ऐसी हालत में भी बिना औरत के ही रहें तो अच्छा ।"11

उमापति की तपेदिक को ठीक करने के प्रयास किए गए किंतु वे ठीक नहीं हो सके "उमापति चाचा की चिकित्सा करने दूर-दूर से डॉक्टर वैद्य और हकीम आए, लेकिन हालत में कोई सुधार नहीं दिखाई पड़ा। भीतर भीतर कनिया चाची का उत्साह भी गिरता जा रहा था।" 12

उमापति मर जाते हैं। रमन देखता है "रोती कनिया चाची को तरह-तरह से सांत्वना दी जा रही थी । कुछ ही देर पहले उनके हाथों की चूड़ियां तोड़ दी गई थी ,टुकड़े बिखरे पड़े थे।"13

भारतवर्ष में विधवा की समस्या युगों- युगों से चलती आ रही है । यद्यपि कुछ परिवर्तन अवश्य हुए हैं तथापि विधवा समस्या अपनी जगह वेदना लिए हुए बनी हुई है । उपन्यास में कनिया चाची के विधवा होते ही अनेक कष्ट उनके लिए शुरू हो जाते हैं वह कहती है "अम्मा जी के मन में बैठी है कि इस परिवार में मेरा आगमन सभी के लिए अशुभ साबित हुआ। मैं न आती और न वे जाते।"14

उज्ज्वल चरित्र को लिए हुए विधवा नारी अनेक गुणों को अपने अंदर समेटे हुए भी रहती है तथापि ऐसे मनचले युवक भी रहते हैं जो उसे सीधे- सादे रास्ते पर नहीं चलने देते। उपन्यास में शंभू चाचा की ऐसी ही स्थिति बनी रहती है। शंभू चाचा कनिया चाची पर नजरें गड़ाए रहते हैं। विधवा कनिया चाची कैसे बचाए अपने को ?

रमन देखता है "शंभू चाचा दुबके बैठे थे। कनिया का एक हाथ पकड़े शायद कुछ कह रहे थे। कनिया चाची के मुंह से मैंने इतना ही सुना था 'नहीं आप समझते नहीं। यह उचित नहीं होगा ।"15

इस प्रकार उपन्यास में कनिया तरह-तरह के कष्टों को झेलती हुई अपने को अशुभ और अमंगलकारी जानकर अनेक कष्टों के बीच में से आगे बढ़ती रहती है। विधवा नारी की जो समस्याएं सदियों से समाज में चल रही हैं वह कहीं ना कहीं आज भी कमोबेश विद्यमान हैं। उपन्यासकार ने बड़े सजीव ढंग से विधवा समस्या को उपन्यास में उतारा है ।

हरी मामा दुलारी के भाई कनिया को ले जाते हैं । कनिया अपने उत्तर दायित्व के निर्वहण के लिए राधा जो कि उमापति की पहली पत्नी से बेटी हैं उनको साथ ले जाना चाहती हैं

पर परिवार वाले नहीं मानते। राधा को दुलारी अर्थात कनिया चाची बहुत चाहती हैं " जाने के दिन कनिया चाची राधा को गोद में लिए बहुत रो रही थी।"16

हरी बाबू ने दुलारी के लिए पुनः विवाह के लिए विचार बना लिया। हर भाई का यही प्रयास होता है कि उसकी बहन अपने घर जाए। हरी बाबू ने भी दुलारी को तैयार किया और श्याम सुंदर से दुलारी का विवाह हो गया "श्याम सुंदर सरल स्वभाव के थे। दुलारी जैसी पत्नी को उन्होंने अपना सौभाग्य माना। वे उसकी प्रत्येक इच्छा का ध्यान रखते थे। उनकी सौम्यता से दुलारी भी संतुष्ट और प्रसन्न थी।"17

उपन्यास में राधा की दुर्गति दुलारी के चले जाने के बाद शुरू हो जाती है। यह दुलारी के साथ-साथ राधा यानी जो दूसरा पात्र है उसकी दुर्गति का चित्रण उपन्यासकार ने बड़े सजीव रूप से किया है दुलारी अर्थात कनिया चाची के चले जाने के बाद राधा उमापति की पहली पत्नी की बेटी बहुत उदास रहने लगी। रमन देखता है "वह पहले से ज्यादा उदास, खामोश और कमजोर दीख रही थी जो राधा पहले हंसती चहकती थी वह ज्यादातर गुमसुम घर में पड़ी रहती थी । घर गृहस्थी का काम ऐसे करती थी जैसे कोई मशीन।"18

परिवार के सभी लोगों के होते हुए भी राधा उपेक्षित होती है और राधा कनिया के जाने के बाद अत्यंत दयनीय स्थिति में पहुंच जाती है। उपन्यासकार ने राधा के चरित्र को बहुत सजीव रूप से अंकित किया है "राधा के लिए संसार सूना था। निराशा केअंधकार में कई प्रकार के संकल्प बने बिगड़े। उस जैसी अशुभ मूर्ति को इस संसार में अब जीने का क्या प्रयोजन।"19

राधा सोचती है कि उसके होने से चाचा -चाची की बेटी की शादी रुकी हुई है। वह सोचती है "तू कितनी हत भागिनी है कि जन्मते ही मां-बाप को खा गई।"20

उपन्यास की तीसरी प्रमुख पात्र अरुणा राधा को इस दुख से निकालने का प्रयत्न करती है। अरुणा पढ़ी लिखी है, विवेकशीला है और राधा को दकियानूसी बातों से अलग करके उसे प्यार से समझाने का प्रयत्न करती है "चिंता मत करो । हम हैं। दुखी होना ठीक नहीं।"21

मेरठ में श्यामसुंदर और दुलारी का जीवन अच्छा चल रहा होता है। वहां उनके पुत्र होते हैं। बड़ा पुत्र नवीन धीरे- धीरे उम्र पाकर बड़ा हो जाता है और उसके विवाह का सवाल उठने लगता है । संयोग ऐसा होता है कि परशुरामपुर में उसके विवाह की बात राधा के साथ चल पड़ती है। राधा तो उमापति की बेटी है और दुलारी को जब यह पता लगता है तो वह चिंतित हो जाती है कि भाई और बहन की शादी कैसे हो सकती है?

इस चिंता के साथ एक चिंता यह है कि यह सब अतीत बताने पर श्यामसुंदर को असलियत का पता लगेगा कि राधा विधवा है और राधा की पहले शादी हुई थी, यह सब पता

चलने के बाद श्यामसुंदर उसके बारे में क्या सोचेंगे? उपन्यास में यह बड़ा मार्मिक प्रसंग है जो दुलारी के साहसी और विवेकशील होने का परिचय देता है। राधा उनकी बेटी है चाहे पहली पत्नी की बेटी हो तो भी उमापति की दुलारी स्वयं पत्नी थी इसलिए वह भी बेटी ही हुई और ऐसा विवाह कैसे हो सकता है कि उसके अपने बेटे नवीन के साथ राधा की बात चले। और अंततः उनके प्रयासों से राधा और नवीन का विवाह कट जाता है। परशुरामपुर में यह बात जब पता लगती है तो रमापति और उनके परिवार वालों को बहुत बुरा लगता है कि दुलारी ने अर्थात कनिया ने दूसरा विवाह कर लिया। जब राधा के विवाह का कार्यक्रम शुरू होता है और विवाह की अनेक तैयारियां होती हैं तो कनिया चाची राधा को आशीर्वाद देने के लिए परशुरामपुर में पहुंचती हैं। राधा के प्रति अपने दायित्व को समझकर दुलारी अर्थात कनिया चाची हर प्रकार के आशीर्वाद देकर उसे ससुराल भेजने का प्रयास करती हैं और अपने गले में डाली गई सोने की चेन को उतार कर राधा के गले में डालकर वह उसे आशीर्वाद देती है। दुलारी का देवर रमापति उसे देखकर प्रसन्न नहीं होता "लोग कल से ही कहने लगे हैं कि रमापति की विधवा भाभी ने दूसरी शादी की। विमला अलग रो रही है । कौन भला आदमी अब मेरी बेटी को अपने परिवार में अपनायेगा , कलंक लग गया है।"22

लेकिन परशुरामपुर में दुलारी राधा की शादी करवा कर ही भली- भांति मेरठ लौटती हैं तो पति श्यामसुंदर को भी प्रसन्न नहीं पाती और श्याम सुंदर उसके साथ कड़वाहट का व्यवहार करने लगते हैं। दुलारी को बहुत कठिनाइयां झेलनी पड़ती हैं परशुरामपुर में भी और मेरठ में अपने पति श्यामसुंदर के साथ भी ।

अनेक कष्टों को जीती हुई वह बहुत हिम्मत से साहस से आगे बढ़ने का जीवन जीने का प्रयास करती है। उपन्यासकार ने दुलारी के चरित्र का निर्माण करके ऐसी नारियों को शक्ति देने का प्रयास किया है, जो नाना झंझावातों के बीच अपने को जिंदा रखते हुए निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करती हैं, रास्ता खोजने का प्रयत्न करती हैं, अपने लिए नई राहें बनाने का प्रयास करती हैं। श्यामसुंदर मेरठ में कटुता के साथ उससे बोलते हैं "जिस तरह परशुरामपुर से मेरठ आई हो उसी तरह मेरठ से कहीं और जा सकती हो।"23

ऐसा सुनकर दुलारी बहुत टूट जाती है वह राधा के लिए अपनी जिम्मेदारी समझकर परशुरामपुर गई थी । दुलारी और ज्यादा दुखी और खामोश रहने लगी। कुछ दिनों के बाद बीमार पड़ गई और रमन उनके पास उनकी स्थिति को देखकर घबरा जाता है। दुलारी बीमारी की अवस्था में बड़बड़ाने लगती है, कुछ-कुछ विक्षिप्त हो जाती है। रमन के बारे में वह कहती है -

"मुझे बहुत मानता है।
कहता है कनिया जब मैं बड़ा होऊंगा, तो तुम्हारी कथा लिखूंगा। उस कथा को तुम पढ़ोगी न कनिया ?"24

और यह कनिया ,यह दुलारी इस विक्षिप्त स्थिति में ठीक नहीं होती है और अंततः मर जाती है। उपन्यासकार इस पात्र को यहां तक लाकर एक अत्यंत मर्मस्पर्शी स्थिति को हमारे सामने प्रकट करता है कैसी यातनाएं झेलती है वह दुलारी। कनिया चाची की यह कथा सचमुच ही बड़ी दर्दनाक है।

इस मुख्य कथा के साथ-साथ रमन और अरुणा की कथा भी साथ- साथ जुड़ती हुई आगे चलती है। रमन और कमलनाथ साथ-साथ पढ़ते हुए एम.एससी करते हैं। दिल्ली के एक हॉस्टल में रहते हुए ही अरुणा से रमन का परिचय होता है और इसी स्थल पर रमन के मौसाजी रमन के लिए एक रिश्ता लाते हैं । रमन के मौसाजी उसके यहां एक फोटो देखते हैं, वह लड़की का होता है और एक चिट्ठी भी पाते हैं। और इस प्रकार रमन के मौसा विद्याधर उसे चरित्रहीन समझकर गांव लौटते हैं और उसके बारे में दुष्प्रचार करते हैं।

रमन पढ़ा-लिखा लड़का है विवेकशील है अरुणा भी विवेक शीला है दोनों परस्पर किसी विचार सूत्र से जुड़े हैं । रमन अपने विचारों पर दृढ़ रहता है। उपन्यास में वह कमलनाथ को कहता है - "ठीक है जब पिताजी बुलाते हैं तो जाकर मिल आता हूँ । मां बीमार है। उसे भी देख लूंगा। किन्तु शादी के मामले में मेरा उनसे कोई समझौता नहीं हो सकता।"25

दिल्ली से रमन अपने गांव लौटता है तो अपने पिताजी को क्रुद्ध पाता है। कायस्थ जाति के रमन के पिता शिवमंगल प्रसाद अपनी प्रतिष्ठा को याद दिलाते हैं लेकिन मां रमन से सहमत हो जाती हैं- "लड़की अगर अच्छी है और रमन को उस पर पूरा भरोसा है तो वह उससे शादी कर ले। जल्दी ना करें। दो महीने ठहर जाए। अगले फागुन तक। शायद पिताजी भी मान जाएं।"26

अरुणा रस्तोगी अर्थात पंजाबी है और रमन कायस्थ है इस बात को लेकर इया भड़क उठती है "लोग कह रहे हैं कि तू दिल्ली में ही किसी दूसरी जाति की लड़की से शादी करने जा रहा है? राम-राम अपने कुल खानदान में ऐसा हुआ है कभी। ऐसा कभी मत करना बेटा।"27

विजातीय होना अक्सर ऐसे विवाहों के मामलों में अनेक विषम परिस्थितियों को जन्म देता है। रमन को अरुणा से विवाह करने के संबंध में केवल एक पक्ष से ही विरोध सहने पड़ते हैं ऐसा बिल्कुल भी नहीं होता बल्कि दूसरे पक्ष अर्थात अरुणा के पिताजी भी रमन को लेकर नाराज हो जातें हैं । अरुणा रस्तोगी साहब की एकमात्र संतान है और रस्तोगी साहब को लगता है कि रमन लाखों करोड़ों की दौलत को पाने के लिए ही अरुणा को फंसा रहा है। रमन का दोस्त जब कमलनाथ रस्तोगी साहब से बात करने जाता है तो वह कहते हैं "उसे अच्छी तरह से मालूम है कि अरुणा मेरी एकमात्र संतान है , उसका पति बनने का मतलब है एक दिन रमन साहब स्वयं मेरे लाखों के कारोबार के मालिक बन जाएंगे।"28

रस्तोगी साहब कमलनाथ को धमकी भरे अंदाज में कहते हैं "लेकिन मैं उनका सपना पूरा नहीं होने दूंगा। मैं भी मनोविज्ञान समझता हूं , आपको पता है मुझे आजिज आकर अंत में अरुणा को अनुमति देनी पड़ी।"29

अरुणा और रमन का विवाह हो जाता है। रमन अरुणा दिल्ली में बस जाते हैं । रमन की मां अपने बेटे बहू को परशुरामपुर अर्थात अपने गांव में बुलाना चाहती है किंतु रमन के पिता शिवमंगल प्रसाद अड़े रहते हैं। शंभूनाथ के साथ रमन की मां बेटे के पास दिल्ली जाने का प्रयास करती हैं लेकिन तभी रमन की चिट्ठी आती है कि वह बहू के साथ स्वयं परशुरामपुर आ रहा है "शिव मंगल प्रसाद उदासीन थे किंतु उनकी पत्नी उल्लास में थीं । कई बार शंभूनाथ से अपनी बहू की शक्ल सूरत के बारे में पूछ चुकी थीं ।" 30

उपन्यासकार ने अरुणा और रमन के विवाह को सफलता की ओर अग्रसर किया है और एक संदेश भी दिया है कि पढ़े-लिखे बच्चे विवेकशील होकर गांव और शहर की दूरी को कम करते हैं और धीरे-धीरे आपसी सहमति से ऐसे भी रिश्ते सफल हो जाते हैं। रमन से नाराज उनके पिता बाद में प्रसन्न हो जाते हैं "शिव मंगल प्रसाद आजकल प्रसन्न है। रमन अरुणा जिस दिन आए उस दिन और आज की स्थिति में अंतर है। उन्हें पता लग गया कि अरुणा एक भली लड़की है।"31

उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि गांव बदल रहे हैं किंतु शांति खत्म हो रही है। उपन्यासकार ने गांव और शहर के यथार्थ चित्रण के साथ-साथ गांव में जो मूल्यवान है उसे अभिव्यक्त किया है "सुख के नाम पर सुविधाएं बढ़ी हैं किंतु मन की शांति छिन गई है। महंगाई ने हमारे अल्हड़पन और मस्ती को चुरा लिया है।"32

उपन्यासकार ने स्वार्थ और परमार्थ ,हित- अहित को उपन्यास में भली-भांति स्पष्ट करने का प्रयास किया है। लेखक कहता है कि "स्वार्थ पहले भी थे। बिना स्वार्थों के समाज टिक नहीं सकता। किंतु पहले का स्वार्थ सहानुभूति के साथ प्रकट होता था । आज सहानुभूति भी एक औपचारिकता है।"33

गांव में रूढ़ियों और अंधविश्वास होते हैं लेकिन उपन्यासकार गांव की शक्ति की भी पहचान कराते हैं। कमलनाथ और श्यामसुंदर की बातचीत से लेखक के गंभीर चिंतन को अभिव्यक्ति मिली है। गांव में भले ही अंधविश्वास हों लेकिन वे अगर मानव के उल्लास की वृद्धि करते हैं तो मानव के हित में हैं। कमलनाथ श्याम सुंदर से एक जगह कहता है "जो अंधविश्वास मानव के उल्लास में वृद्धि करते हैं वह हमेशा कल्याणकारी हैं। वह वैज्ञानिक प्रगति किस काम की जो हमारे स्वाभाविक उल्लास को छीन ले। पचास तरह के तर्कों और चिंताओं में उलझ- उलझ

कर हम चमचमाती कारों और वायु यान में चलें, बैठें लेकिन चेहरे पर अगर फिक्र की स्याही पुती रहे तो उस जीवन का प्रयोजन समझ में नहीं आता।"। 34

उपन्यास में श्यामसुंदर और कमलनाथ की बातचीत लेखक के मंतव्य को व्यक्त करती है। गांव के महत्त्व को समझाते हुए कमलनाथ कहता है "वैज्ञानिक प्रगति के मूल्य पर मनुष्य से उसका स्वाभाविक उल्लास ने छीना जाए। परशुरामपुर चाहे पिछड़ा गांव है किंतु वहां भी तो लोग जीते हैं। उनमें कुछ तो हम शहरियों से भी बेहतर जीते हैं। हम अपने ज्ञान की आँच से उनकी आस्थाओं को झुलसा नहीं सकते।"35

इस प्रकार 'तुम मेरी कथा 'उपन्यास में कहानी भले ही दुलारी राधा अथवा अरुणा की हो लेकिन इसके साथ गांव के महत्त्व को गांव के जीवन और संस्कृति को समझाने के लिए उपन्यासकार ने जो ताना-बाना बुना है वह आकर्षक है । उपन्यास की भाषा शैली में अद्भुत सम्पेषणीयता का गुण है। कथानक में रोचकता, कौतूहल ,जिज्ञासा और प्रवाह रहता है । संवाद कथा का विकास करते हैं और चरित्रों पर प्रकाश डालते हैं। परिवेश कभी गांव का होता है तो कभी दिल्ली और मेरठ का लेकिन बड़ा विश्वसनीय और प्रामाणिक लगता है। संपूर्ण उपन्यास बहुत प्रभावशाली है।

संदर्भ सूची -

तुम मेरी कथा- रमाशंकर श्रीवास्तव - साहित्य सहकार, ई. 10/4 कृष्णा नगर, दिल्ली-110051, 1991

1. तुम मेरी कथा- रमाशंकर श्रीवास्तव - पृ. 08
2. ----------वही---------- पृ. 8
3. ----------वही---------- पृ. 9
4. ----------वही---------- पृ. 9
5. ----------वही---------- पृ. 10
6. ----------वही---------- पृ. 10
7. ----------वही---------- पृ. 16
8. ----------वही---------- पृ. 31
9. ----------वही---------- पृ. 33
10. ----------वही---------- पृ. 36
11. ----------वही---------- पृ. 37
12. ----------वही---------- पृ. 78

13. ----------वही---------- पृ. 83
14. ----------वही---------- पृ. 91
15. ----------वही---------- पृ. 107
16. ----------वही---------- पृ. 110
17. ----------वही---------- पृ. 167
18. ----------वही---------- पृ. 122
19. ----------वही---------- पृ. 217
20. ----------वही---------- पृ. 218
21. ----------वही---------- पृ. 218
22. ----------वही---------- पृ. 257
23. ----------वही---------- पृ. 259
24. ----------वही---------- पृ. 361
25. ----------वही---------- पृ. 22
26. ----------वही---------- पृ. 30
27. ----------वही---------- पृ. 36
28. ----------वही---------- पृ. 40
29. ----------वही---------- पृ. 40
30. ----------वही---------- पृ. 91
31. ----------वही---------- पृ. 115
32. ----------वही---------- पृ. 85
33. ----------वही---------- पृ. 85
34. ----------वही---------- पृ. 245
35. ----------वही---------- पृ. 245